Volume : 2 | Issue : 12 | Dec 2013 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Political Science

हिन्दुत्वः समकालीन राजनीति एवं प्रासंगिकता
Hindutva : Samkalin Rajniti Evam Prasangikta

Vinti Rani Assistant Professor S.D. (P.G.) College, Panipat

Ravinder Kumar Lecturer in Education Department Haryana

ABSTRACT

वर्तमान काल में जहां तक हिन्दुत्व का संबंध है, वही स्थिति है जो जवाहरलाल नेहरू के काल में थी। प्रत्यक्ष रूप से हिन्दुत्व का विरोध नहीं है, परन्तु हिन्दुओं के संगठन और उनके देश की संस्कृति को ठीक दिशा देने में बाधा पड़ रही है। जहां तक हिन्दुत्व के बौद्धिक विकास का संबंध है, उसे अहिन्दू राज्य ने अपने हाथों में ले रखा है। जो कुछ हिन्दू समाज के साथ मुसलमानी काल में दुर्व्यवहार हुआ था। उसका किसी एक बात में भी निराकरण अभी तक नहीं हुआ है।

KEYWORDS : fgUnRo, fgUn&/ke] Hkkjrh; lLdfr] Hkkjrh; jktuhfrA

ईसा के जन्म के पश्चात् भारत पर जितने भी आक्रमण हुए और विशेष रूप से मध्यकाल में जो आक्रमण हुए, उस दौरान इन आक्रमणकारियों ने भारतीय जीवन–शैली और भारतीय दर्शन तथा संस्कृति को जो नाम दिया, वह 'हिंदू' था। आज 'हिन्दुत्व' अर्थात् 'भारतीयता' सरीखा शब्द भी रूढ़िवादिता, सांप्रदा. यिकता और फासीवाद का बोधक एवं प्रतीक समझा जा रहा है। इस विडंबना का मूल कारण भारतीय राजनीति की वर्तमान मानसिक दुर्बलता और क्लैव्य ही है।[1] हिन्दुत्व मजहब नहीं हैं। हिन्दुत्व मजहबों से ऊपर हैं। हिन्दू रहते हुए किसी मजहब को माना जा सकता है और फिर हिन्दुत्व की मान्यताओं को मजहब से ऊपर माना जा सकता है।[2] हिन्दुत्व अथवा भारतीयता ने अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए निरन्तर यत्न किया है। हिन्दुत्व के मूल सिद्धान्त न्याययुक्त और सत्य सिद्धान्तों पर आधारित है। यह उन देशों में, जहां की संस्कृति मिट गई है, ऐसा नहीं।[3]

हिन्दू समाज में शुद्धता की बहुत महिमा है परन्तु शुद्धता को जाति–पाति अथवा जन्मजात मानने से छुआछूत का रोग उत्पन्न हो गया है और यह हिन्दू मान्यताओं के ह्रास का कारण हो रहा है।[4] नैशनलिस्ट पार्टी हिन्दुत्व का राजनीतिक पक्ष था। अपने में हीन भावना के कारण एवं अपने महान् उद्देश्य को भूल कर तथा तथा गांधी जी के हो–हल्ला के पीछे लगकर यह दल निस्तेज हो गया। यद्यपि नैशनलिस्ट दल का मूल हिन्दू महासभा तो स्थापित रही, परन्तु इसमें वह तेज दिखाई नहीं देता था जो सावरकर और डॉक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी के कारण उत्पन्न हुआ था।[5] स्वराज्य–प्राप्ति के पश्चात् हिन्दू महासभा एन.सी. चैटर्जी के पल्ले पड़ी। वे नीम कम्यूनिस्ट थे और हिन्दू महासभा की गाड़ी चला नहीं सके। प्रकार हिन्दुत्व के पुनरूत्थान का यह प्रयास सुषुप्ति अवस्था में हो गया।[6] राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रवर्त्तक डॉक्टर हैडगेवार ने हिन्दू युवकों को जातीय रक्षा के लिए बौद्धिक और शारीरिक रूप से तैयार करने की एक योजना बनाई। योजना का नाम रखा गया– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।[7]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में विशेषता यह है कि यह जहां बौद्धिक कार्यक्रम चलाता है, वहां यह राजनीति से भिड़ने के लिए भी तत्पर हैं। यह निश्चित है कि जिस दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने यह निश्चय किया था कि वह राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करेगा। यह प्रभावहीन होने लगा था।[8] आपातकाल में हिन्दुत्व की सांस्कृतिक दिशा में किसी प्रकार की प्रगति नहीं हुई। इस आपात स्थिति में धर्म संस्थाएं, आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा इत्यादि पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगा था, यद्यपि उनके सार्वजनिक उत्सव इत्यादि होने में कठिनाई थी, केवल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध था।[9] राजनीति के साथ सम्बन्ध बुरी बात नहीं है। हिन्दू समाज में एक सजीव, सबल अंग को राजनीति में भाग लेते देख प्रसन्नता होती है, परन्तु इसका आधार व्यापक और विस्तृत होना चाहिए। हिन्दू समाज में अनेकानेक मत–मतान्तर हैं। अपनी–अपनी पूजा–पद्धति रखते हुए भी इनका राजनीति में समान भाग हो सकता है। साथ ही जो लोग नीति निर्माण करते है वे ही कार्य के उत्तरदायी होने चाहिए। यह नहीं कि नीति निर्माण कोई करे और सफलता न मिले तो दोष दूसरों पर थोपे जायें।[10] जनता पार्टी ने संसद की सदस्यता की शपथ लेते ही महात्मा गांधी जी की समाधि पर जाकर उनके पद् चिन्हों पर चलने की शपथ ली थी। इससे यह भ्रम उत्पन्न होता था कि कम–से–कम दल हिन्दू हितों की रक्षा करेगा। परन्तु ये संसद सदस्य अधिकांश में विश्लेषणात्मक बुद्धि नहीं रखते थे, जो हिन्दुत्व की विशेषता है।[11]

वर्तमान काल में जहां तक हिन्दुत्व का संबंध है, वही स्थिति है जो जवाहरलाल नेहरू के काल में थी। प्रत्यक्ष रूप से हिन्दुत्व का विरोध नहीं है, परन्तु हिन्दुओं के संगठन और उनके देश की संस्कृति को ठीक दिशा देने में बाधा पड़ रही है। जहां तक हिन्दुत्व के बौद्धिक विकास का संबंध है, उसे अहिन्दू राज्य ने अपने हाथों में ले रखा है। जो कुछ हिन्दू समाज के साथ मुसलमानी काल में दुर्व्यवहार हुआ था। उसका किसी एक बात में भी निराकरण अभी तक नहीं हुआ है।[12] पिछले वर्षो से यह झूठा प्रचार भी सुनियोजित रूप से किया गया कि हिन्दू संगठन उग्रवाद को बढ़ावा दे रहे हैं, और हिन्दू समाज धीरे–धीरे असहिष्णु हो रहा है तथा उसमें उग्रवाद की प्रवृत्ति पनप रही है।[13] कुछ तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिवादी तो इससे जार–जार हुए जा रहें है। वह अपने लेखों और भाषणों में मंदिर की मांग करने वालों के लिए बार–बार हिन्दू उग्रवादी शब्द प्रयोग करते हैं। यह इसलिए जो हिन्दू समाज कल तक सोया पड़ा था वह अब जाग उठा है और स्वाभिमान के जीवन के लिए संगठित प्रयास करने लगा है।[14] इसे विडम्बना नहीं तो क्या कहें जिस समय पूरा विश्व जिहादी आतंकवाद के विरूद्ध आत्मरक्षा की व्यूह रचना में लगा है। उस समय खण्डित भारत के राजनेता एवं केन्द्र सरकार 'हिन्दु आंतकवाद' का हौब्बा खड़ा करने में जुटे है। कुछ मुट्ठी भर लोगों के द्वारा इस विशाल देश में दो–चार स्थानों पर घटी घटनाओं को 'हिन्दू आंतकवाद' का नाम देकर पूरे हिन्दू समाज को लांछित किया जा रहा है। जबकि यह हिन्दू समाज कश्मीर से लेकर केरल तक इस्लामी आंतकवाद का आक्रमण झेल रहा है।[15]

'यूनान–मिस्त्र–रोमा सब मिट गए जहां से कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' लगता है कि अपने देश की समस्त हिन्दुत्व विरोधी शक्तियां एकत्रित होकर इकबाल की इस पंक्ति को सच्चाई को झूठा साबित करने में जुट गई हैं। हिन्दुत्व विरोधी घृणित राजनीति कथित हिन्दू आंतकवाद की जन्मदाता है। दुर्भाग्य से हिन्दुत्व को मिटाने के षड़यंत्र आज भी चल रहे है।[16]

जो राजनीतिज्ञ और विचारक हिन्दुत्व को संकीर्णता का प्रतीक बताते हैं और 'हिन्दुत्व' शब्द से जो उदारता एवं सर्वव्यापकता अभिप्रेत है, उसे अस्वीकार कर रहे हैं उनका तर्क है कि 'हिन्दुत्व' शब्द का भारतीय वाड्मय से कोई संबंध है ही नहीं।[17] भारतीयता यदि संकीर्ण है, अनुदार है, तो हिन्दुत्व भी संकीर्ण और अनुदार है, भारतीय चिंतन तो यह अधिकार किसी भी व्यक्ति को नहीं देता कि भारतीयता को रूढ़ियों से बांध दिया जाएं। हिंदुत्व की अवधारणा संकीर्णता और रूढ़िवाद तथा साम्प्रदायिकता की प्रतीक नहीं है। इस पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपनी व्यवस्था दे दी है और कहा है कि हिंदुत्व से आशय है– भारत की जीवन–शैली से है। कभी सावरकर का नाम लेकर और कभी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर की आड़ लेकर 'हिन्दुत्व' पर अनुचित प्रहार करने की चेष्टा की जाती रही है।[18] भारतीय जीवन–दर्शन, जिसे पहले विदेशी आक्रमणकारियों ने और बाद में भारत में रहने वाले मुसलमानों ने भी 'हिन्दू' कहकर संबोधित किया। क्या उसमें सहिष्णुता, उदारता, विशालता, सार्वदेशिकता और राष्ट्रीयता का अभाव है। हिन्दुत्व तो एकात्म–मानववाद का समर्थक है और उससे एक भू–सांस्कृतिक अवधारणा का बोध होता है। आखिर उसे 'रिलीजन' या 'मजहब' अथवा किसी 'आस्था विशेष के साथ जोड़ा जा रहा है।[19]

हिंदुत्व के विरोध में कुछ राजनीतिज्ञों का यह तर्क है कि वह तो भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना का आदर्श है और हिंदुत्व के कारण ही बाबरी ढांचे को ढहाया गया, अतः इस शब्द का प्रयोग उचित नहीं है, क्योंकि यह शब्द 'साम्प्रदायिक' है, तो उचित यह होगा कि इस तर्क का विवेक सम्मत परीक्षण किया जाए।[20] हिन्दुत्व को संदेह की दृष्टि से देखने का एक प्रमुख आधार यह भी रहा है कि भारत के अनेक राजनेताओं एवं राजनीतिक दलों ने हिन्दुत्व को उपासना–पद्धति, कर्मकांड और मजहब से जोड़ा है। राजनीतिज्ञों ने ही नही, भारत के अनेक 'धर्माचार्यो ने हिंदुत्व को धर्म की संज्ञा दी है और उसे 'हिन्दू धर्म' कहकर संबोधित किया है।[21]

आज हिन्दुत्व को राजनीति से जोड़ा जा रहा है उसे एक राजनीतिक अथवा सांप्रदायिक अवधारणा कहकर लांछित और अपमानित किया जा रहा है। दुःख की बात यह है कि यह लांछन अभारतीय तो लगा ही रहे है, पर भारतवासी भी स्वयं लगा रहे हैं।[22] हाल के वर्षो में वोट बैंक की राजनीति के दुरूप्रभाव में आकर हिंदुत्व पर जितने अपमानजनक प्रहार किए गए है, वे चिंताजनक है। इन प्रहारों से भारत का आत्मविश्वास तो टूट ही रहा है, साथ ही नई पीढ़ी के

भ्रमित होने की संभावनाएं भी बढ़ती जा रही है। नई पीढ़ी को भ्रमित करने में पश्चिम से आए सांस्कृतिक उपनिवेशवाद का बहुत बड़ा हाथ है। यद्यपि पहले की तरह आज का विश्व राजनीतिक उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद से पीड़ित नहीं है, पर आने वाली शताब्दी में आर्थिक–सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की समस्याओं से मानवता को जूझना ही होगा।[23]

हाल के वर्षो में वोट बैंक की राजनीति के दुरूप्रभाव में आकर हिंदुत्व पर जितने अपमानजनक प्रहार किए गए है, वे चिंताजनक है। इन प्रहारों से भारत का आत्मविश्वास तो टूट ही रहा है, साथ ही नई पीढ़ी के भ्रमित होने की संभावनाएं भी बढ़ती जा रही है।[24] भले ही यह बात कुछ लोगों को कटु लगे पर सत्य यही है कि हिन्दुत्व का विरोध मूलतः राजनीतिक है।[25]

आज संविधान, राजनीति जन्म आधारित जाति–व्यवस्था को मान्यता नहीं देते और एक लोकतांत्रिक समाज की सरंचना में लगे हुए हैं परन्तु तमाम प्रयासों के बाद भी यह कार्य नहीं हो पा रहा है। भारतीय जीवन दर्शन अपने मौलिक रूप में कितना ही श्रेष्ट क्यों न रहा हो, पर दुर्भाग्यवश अनेक कारणों से उसका क्षरण होता रहा और सभी में एक ही परमात्मा का वास है। इस भावना का लोप होता गया। देखते–देखते सब पाखंड़ की ओर बढ़ते चले गए और समानता के भाव का परित्याग कर दिया। वर्तमान में तो ऐसा लगता है कि सारा का सारा हिन्दू समाज जन्म आधारित जातिवाद से इतना अधिक अभिशप्त हो चुका है कि उसकी मुक्ति का जैसे कोई उपाय नहीं है। इस जातिवाद के कारण समाज में अतः कलह बढ़ती जा रही है। हिन्दुत्व तो अपनी मौलिक चेतना में सतत् भगीरथी की तरह प्रवाहित है जो अनन्त और सनातन है। हिन्दुओं के ही प्रमाद, अहंकार अथवा मूर्च्छा ने एक सड़ता हुआ पोखर–सा बना दिया है। हिन्दुत्व पुनः राष्ट्रप्रेम से, सामाजिक समरसता से कैसे ओत–प्रोत हो, यह आज बहुत बड़ी समस्या है। आज तो हिन्दुत्व जातियों, क्षेत्रों, भाषाओं और कर्मकाण्डों में बंटा हुआ है।

REFERENCES

1. नरेन्द्र मोहन, हिन्दुत्व, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ.254–255. द्य 2. गुरूदत्त, हिन्दुत्व की यात्रा, हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2002, पृ.13–14. द्य 3. वही, पृ. 37. द्य 4. वही, पृ. 38. द्य 5. नरेन्द्र सहगल, "घृणित राजनीति", पाञ्चजन्य, अंक–10, नई दिल्ली, 1 अगस्त, 2010. द्य 6. बलराज मधोक, हिन्दू राज्य तात्विक आधार आवश्यकता और प्रासंगिकता,, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृ.75. द्य 7. देवेन्द्र स्वरूप, "इस राजनीति में क्या भारत जिन्दा रहेगा?", पाञ्चजन्य, अंक–17, नई दिल्ली, 26 सितम्बर, 2010. द्य 8. के.एस. सुदर्शन, हिन्दुत्व ही भारत का भवितव्य, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कलकत्ता, 2003, पृ. 15. द्य 9. सुरेश सोनी, गुरूत्व याने हिन्दुत्व, अर्चना प्रकाशन, भोपाल, 2008, पृ.12. द्य 10. रज्जू भैया, संघकार्य तथा विविध विषय, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2000, पृ.86. द्य 11. वही, पृ.91. द्य 12. मोहनराव भागवत, संगठित हिन्दू–समर्थ भारत, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ.53. द्य 13. बलवन्त राय गर्ग, श्रीराम जन्म–भूमि मंदिर अयोध्या की रक्त–रंजित गौरव–पूर्ण गाथा, भारत विद्या विहार, अम्बाला छावनी, 1993, पृ.18. द्य 14. लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दू संस्कृति और सत्तावादी राजनीति, सुरूचि साहित्य, नई दिल्ली, 2005, पृ. 15. द्य 15. वही, पृ.30. द्य 16. वही, पृ.49. द्य 17. अमर सिंह व अशोक मेहता, हिन्दुत्व और सर्वोच्च न्यायालय, लोक जागरण अभियान, उत्तरप्रदेश, 1996, पृ.46. द्य 18. वही, पृ.64. द्य 19. वही, पृ.67. द्य 20. नरेन्द्र मोहन, पादटिप्पणी सं.1, पृ.270. द्य 21. नरेन्द्र मोहन, पादटिप्पणी सं.1, पृ.273. द्य 22. बजरंग लाल गुप्ता, हिन्दू अर्थ वित्तन, भारतीय विचार साधना, नागपुर, 2003, पृ. 32. द्य 23. रज्जू भैया, पादटिप्पणी सं.10, पृ.88. द्य 24. देवेन्द्र स्वरूप, "हिन्दू चरित्र तब और अब", पाञ्चजन्य, अंक–54, नई दिल्ली, 4 अप्रैल, 2010. द्य 25. नरेन्द्र सहगल, "नहीं छोड़ेगें धर्म और धरती", पाञ्चजन्य, अंक–54, नई दिल्ली, 4 अप्रैल, 2010. द्य